

## महापाषाणकालीन पदचहिन और मानव आकृति

स्रोत: द हट्टि

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में केरल के मडकिर्कई में प्रागैतहासिक महापाषाणकालीन पदचहिनों के 24 जोड़े और एक मानव आकृति की खोज की गई है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह [मेगालथिक/महापाषाण काल](#) के हैं।

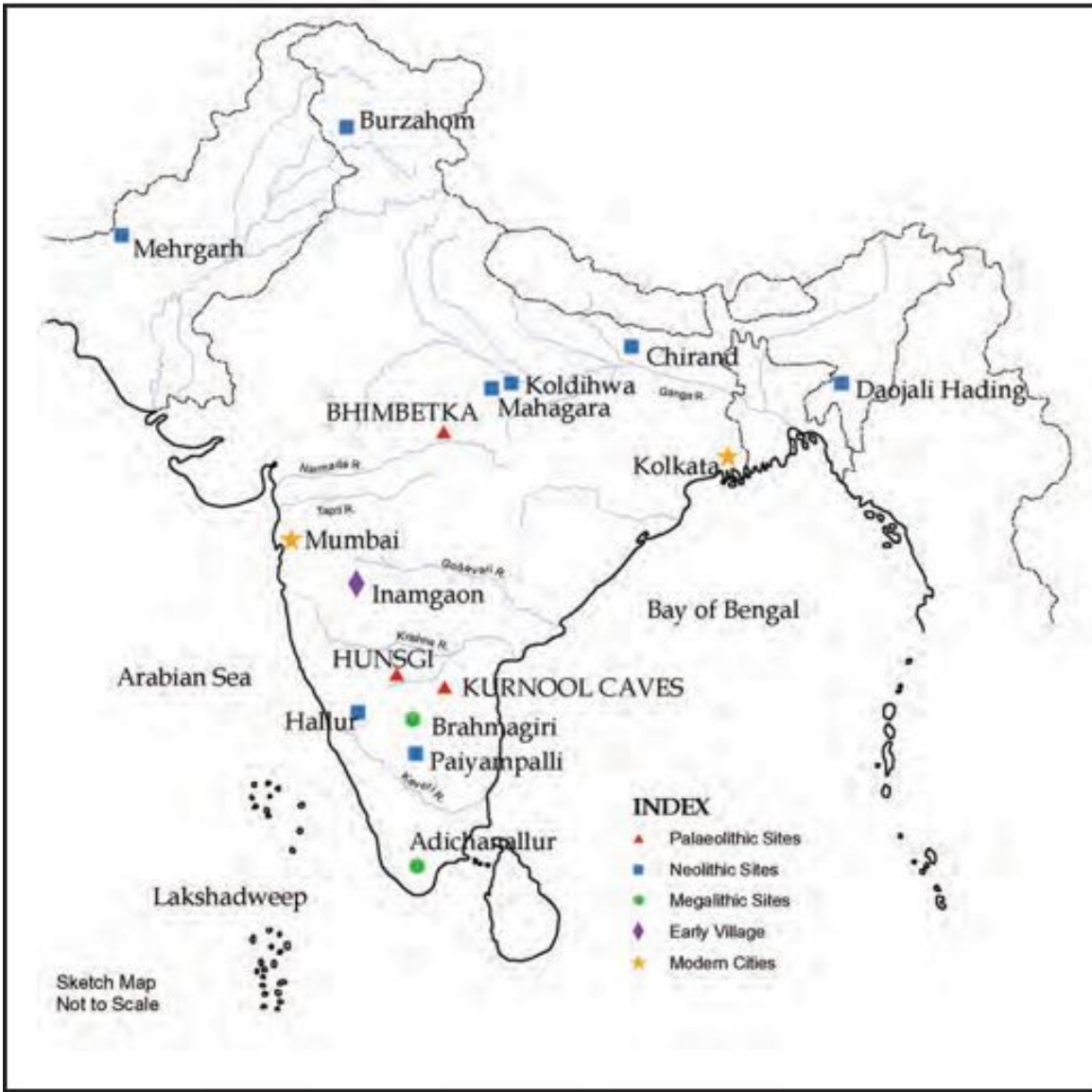
### नषिकर्षों की मुख्य बातें क्या हैं?

- सांस्कृतिक महत्त्व: सभी पदचहिन पश्चिम की ओर इशारा करते हैं, जो संभवतः उनके प्रतीकात्मक महत्त्व को दर्शाते हैं।
  - पुरातत्त्ववर्तियों का मानना है कि ये मृत व्यक्तियों की आत्माएँ हैं, जबकि स्थानीय नवासी इन्हें देवी का प्रतीक मानते हैं।
- आयु: अनुमान है कि यह 2,000 वर्ष से अधिक पुराना है, जो केरल के ऐतहासिक आख्यान को गहराई प्रदान करता है।
- अन्य खोजें: यह कर्नाटक के उडुपी ज़िले के अवलाककी पेरा में पाई गई प्रागैतहासिक रॉक कला से मेलिती जुलती है।
  - केरल में प्रागैतहासिक खोजों में शामिल हैं:
    - कासरगोड में एरकुिलम वलियापारा में मंदिर की सजावट।
    - नीलेशवरम में बाघ की नक्काशी चल रही है।
    - चीमेनी अरथित्तापारा में मानव आकृतियाँ।
    - कन्नूर में एट्टुकुदुक्का में बैल की आकृतियाँ।
    - वायनाड में एडक्कल गुफाओं की नक्काशी।

नोट: प्रागैतहासिक काल का तात्पर्य लखित अभलिखों के अस्तित्व से पहले के मानव इतहास की अवधि से है। इसमें आरंभिक मानव अस्तित्व से लेकर लेखन प्रणालियों के आगमन तक का समय शामिल है, जो आमतौर पर 3000 ईसा पूर्व से पहले का है।

### महापाषाण संस्कृति क्या है?

- महापाषाण संस्कृति के बारे में: महापाषाण संस्कृति एक प्रागैतहासिक सांस्कृतिक परंपरा को संदर्भित करती है, जिसकी वशिषता बड़े पत्थर की संरचनाओं या स्मारकों का निर्माण है, जनिहें महापाषाण/मेगालथि के रूप में जाना जाता है।
- महापाषाणों का कालक्रम: बरहमगरी उत्खनन से दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृतियों का काल तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी के बीच का पता चलता है।
- भौगोलिक वितरण: महापाषाण संस्कृति का मुख्य संकेंद्रण दक्कन में है, वशिष रूप से गोदावरी नदी के दक्षिण में।
  - यह पंजाब के मैदानों, सधु-गंगा बेसिन, राजस्थान, गुजरात और जम्मू एवं कश्मीर के बुर्जहोम में पाया गया है, जनिमें सेराइकला (बिहार), खेड़ा (उत्तर प्रदेश) और देवसा (राजस्थान) प्रमुख स्थल हैं।
- लोहे का उपयोग: दक्षिण भारत में मेगालथिक काल एक पूर्ण वकिसति लौह युग संस्कृति का प्रतीक है, जहाँ लौह प्रौद्योगिकी का पूर्ण उपयोग किया गया था।
  - इसका प्रमाण वदिरभ के जूनापानी से लेकर तमलिनाडु के आदचिनललूर तक मल्ले लौह हथियारों और कृषि उपकरणों से मलिता है।
- शैल चित्र: महापाषाण स्थलों पर पाए गए शैल चित्रों में शकिकार, पशु आक्रमण और समूह नृत्य के दृश्य दर्शाए गए हैं।



**MAP: Some Important Archaeological Sites**

## यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

Q. नमिनलखिति युगमों पर वचिर करे: (2021)

(ऐतहिसकि स्थान) (परसदिध)

1. बुरजहोम : शैलकृत देव मंदरि
2. चंद्रकेतुगढ़ : टेराकोटा कला
3. गणेश्वर : ताम्र कलाकृतयिँ

उपर्युक्त में से कौन-सा/से युगम सही सुमेलति है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) 1 और 2
- (c) केवल 3
- (d) 2 और 3

उत्तर: (d)

